International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue-7 March- Apr 2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

March-Apr Volume-2 Issue-7

On

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary
Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor
Prof. Dr. V. V. Killedar
Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur

Co- Editors

डॉ. एस. पी. पवार
लैफ्ट.डॉ. आर.सी. पाटील
डॉ. एस. जे. आवळे
प्रा. एन.पी. साठे
प्रा. ए. बी. घुले
प्रा. डॉ.एम. टी. रणदिवे
डॉ. एन. ए. देसाई

Published by- Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

48	शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन	डॉ. संतोष बबनराव माने.	127-128
49	हिंदी कविता में दलित चेतना	डॉ. संतोष मोटवानी	129-131
50	भूमंडलीकरण और 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास	डॉ. भगत सारिका आप्पा	132-133
51	'यमदीप' में चित्रित किन्नरों का पारिवारिक संघर्ष	प्रा. डॉ. एस. बी. बिडकर	134-135
52	बारेला समाज में प्रचलित अनोखी एवं सर्वश्रेष्ठ परम्पराएं	डॉ. श्रीमती सेवन्ती डावर	136-137
53	'सागर लहरें और मनुष्य' उपन्यास में चित्रित दलित मछुओरों का यथार्थ जीवन	डॉ. शाहीन अजज जमादार	138-139
54	हिन्दी साहित्य : दलित एवं आदिवासी विमर्श	डॉ. शिवकांता रामकिसन सुरकुटे	140-141
55	हिंदी साहित्य : किसान विमर्श	प्रा.कोकाटे शोभा नानाभाऊ	142-143
56	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान विमर्श	डॉ. श्रीकांत पाटील	144-145
57	हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श	प्रो. (डॉ.) सिद्धेश्वर विट्ठल गायकवाड	146-147
58	मालती जोशी की कहानी 'उत्सव' में स्त्री-विमर्श	डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जे-पाटील	148-149
59	मनोज सोनकर के काव्य मे : नारी विमर्श	प्रा. सोनाली रामदास हरदास	150-153
60	रामकुमार वर्मा लिखित एकलव्य खंडकाव्य में दलित चेतना	डॉ.सौदागर सालुंखे	154-155
61	समाज में किन्नरों की मुख्य समस्याएं	सुभाष विष्णू बामणेकर	156-158
62	जयकाली बहू	डॉ. सुचिता संतोष भोसले	159-160
63	आज का भारतीय किसान:एक विमर्श	डॉ.सुनील अभिमन्यु गायकवाड	161-162
64	हिंदी उपन्यास: किसान विमर्श	सुनील चांगदेव काकडे	163-164
65	मिले सुर मेरा तुम्हारा: किसान समस्या	डॉ. सुनिता हुन्नरगी	165-167
66	हिंदी साहित्य में किसान विमर्श	प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री	168-170
67	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विचारधारा से प्रेरीत नारी (दलित समाज कि कहानियाँ : रत्नकुमार साम्भरिया के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डॉ . सुवर्णा नरसू कांबळे	171-173
68	सुशीला टाकभौरे के 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में चित्रित दलित नारी जीवन	तब्बसुम शकील पठाण	174-175
69	हिंदी साहित्य: नारी विमर्श	डॉ.वैशाली प्रशांत सामंत	176-177
70	कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य के माध्यम से अभिव्यक्त नारी विमर्श	डॉ. वंदना पाटील	178-180
71	महिला कहानीकारों की कहानियों में महानगरीय विमर्श	डॉ विट्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत	181-182

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue.7 Mar - Apr 2022

शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित जीवन

डॉ. संतोष बबनराव माने.
शिवराज महाविद्यालय, गडहिंग्लज ४१६५०२ जिल्हा – कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

संपूर्ण विश्व में भारतीय समाज का इतिहास अनेक वर्षो का माना जाता है। यही कारण है कि अनेक नई –नई परंपराए, रिती-रिवाज, संस्कृती का निर्माण होता रहा। हर एक युग में समाज और व्यक्ती की सभ्यता के बदलाव होते रहे और इस हजारो साल के इतिहास ने भारतीय संस्कृती को जन्म दिया जो सारा विश्व भारत कि ओर आकर्षित होता रहा। भारतीय सत्ता, धन का लालच ओर व्यापार के कारण भी विदेशी संस्कृती का असर भारतीय संस्कृती पडा। लेकीन समाज के इस परिवर्तन में एक ओर समाज का विकास हुआ तो दुसरी ओर समाज में गलत परंपराए , धारणाओं का निर्माण भी होता रहा। एक दरम्यान विविध जाती – धर्म की जडे भारतीय समाज में बढती रही। समाज के इस भेदभाव की यह कुटनीती मानव जीवन को पीडित बनती रही। अपनी श्रेष्ठता को साबित करने के लिये एक व्यक्ती दुसरे व्यक्ती को, एक समाज दुसरे समाज को हीनता से देखने लगा। एक ओर देश को संस्कृती के कारण महानता मिली तो दुसरी ओर मनुष्य –मनुष्य में भेदभाव का निर्माण हुआ फलस्वरूप समाज में दरारे बढती गई और संस्कृती की नीव दगमगाने लगी।

समाज के इस दरार में समाज का एक वर्ग अपने आपको उच्च वर्ग मानने लगा तो दुसरा वर्ग निम्न में विभाजित हुआ। उच्च वर्ग के लोगों से निम्न वर्ग का शोषण होने लगा जो यह निम्न वर्ग को पिडीत, दलित मानने की प्रथा शुरू हुई। भारतीय समाज में दलित वर्ग का इतिहास भी मानव जाती को अपमानित करनेवाला है। इतिहास के हर युग में इन दलितों पर अन्याय, अत्याचार होता रहा। इन दलितों का उद्धार करने का प्रयास अनेक महान व्यक्तियों ने किया। साथ ही दलित विकास में साहित्य और साहित्याकारों का प्रयास भी काम महत्वपूर्ण नही माना जा सकता। बार-बार मानव जीवन का इतिहास लिखकर मनुष्य का निर्माण और उसके विकास को दिखाकर मानव-मानव में एकता लाने का प्रयास साहित्यकारों ने ही किया है। जयशंकर प्रसाद की रचना 'कामायणी' और विष्णुदत्त राकेश की रचना 'नभग' इसके खास उदाहरण है, लेकीन आज भी भारत के किसी कोने पर दलित अत्याचार की घटना होती है जो भारतीय समाज में , साहित्य में एक चिंता का विषय बन जाती है। 'दलित' यह शब्द दलितों का जीबन है। दलित वर्ग के लोगों के जीवन की समस्यांए जिसमें गलत रूढीया ,मान्यताएँ है जिससे यह वर्ग पीडित है। दलित का शाब्दिक अर्थ कुचला हुआ दलित वर्ग है लेकीन आज यह विशिष्ट जाती के ऊपर दमन हुआ है। आज भी किसी स्थान पर सुवर्ण वर्ग से दलित वर्ग पर अत्याचार होता रहा है। दलितो के लिये शुद्र, अछूत, हरिजन बाहरी जातियाँ ऐसा कहकर मानव जाती में भारतीय संस्कृती को अपमानित करने की घटना बनती है।

इक्कीसवी सदी में महात्मा गांधी , डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर , शाहू महाराज, महात्मा फुले इन महान व्यक्तियों ने दलित वर्ग के विकास में बडा योगदान दिया। साथ ही दलित वर्ग की आवाज बाहर लाने का प्रयास और उन्हे न्याय देने प्रयास हिंदी साहित्य में काव्य, उपन्यास, नाटक और कहानी के माध्यम से भी हुआ है। दलित वर्ग के जीवन को दिखाकार साहित्यकारों ने मानव-मानव में सभ्यता लाने का प्रयास किया है। शैलेश मटीयानी की कहानियाँ इसके खास उदाहरण हो सकते है। दलितों को मंदिर प्रवेश नही था। कुछ महान व्यक्ती दलितों को न्याय देने का प्रयास करते है तो कुछ लोग दलितों को अछूत मानकर उन्हें पीडित बनाते है। स्वातंत्र्य पूर्व काल में दलित वर्ग पर अधिक अत्याचार होता रहा। काशी के मंदिर में दलितो को प्रवेश निषेध था तब प्रेमचंद ने जागरण अंक १९३२ में संपादन करके दलितों का समर्थन किया। प्रेमचंदने ने लिखा कि,"जो आदमी इस तत्व को नही समजता वह वेदों और शास्त्रों का पंडित होने पर भी मूर्ख है, जो दुखियों के दुख से दुखी नहीं होता जो अन्याय देखकर उत्तेजित नही होता, जो समाज में ऊंच –नीच, पवित्र –अपवित्र के भेद को बढाता है, वह पंडित होकर भी मूर्ख है।" १. स्वातंत्र्य पूर्व काल में दलितों के प्रती जो घृणा थी उसका विरोध प्रेमचंदजी ने किया। ब्राह्मण वर्ग के इस अन्याय का विरोध उस समय प्रेमचंद ने किया।

स्वातंत्र्योत्तर काल के शैलेश मटियांनी ऐसे लेखक रहे है जिनकी कहानी संग्रहो में दलित चेतना मिलती है। 'बर्फ कि चट्टाने' और 'मेरी तैंतीस कहानियाँ' इन कहानी संग्रहो में एक तरफ पहाडी प्रदेश है तो दुसरी तरफ महानगरीय जीवन है। मटियानी जी के कहानियों में कुछ ऐसे पात्र है जिनमें कही बहुत भीतर, मनुष्य होने का एहसास नही है। भारतीय समाज ग्रामीण या शहरी हो दलितों पर अन्याय, अत्याचार वहाँ होता ही रहा है।

शैलेश मटियानी की कहानी का आरंभ सन १९५४ से आरंभ होता है। यह कहानी लेखन की यात्रा सन १९५४ से २००१ तक चलती रही जिससे स्वांतत्र्य पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर इस काल के दलित समाज का जीवन का चित्रण प्रस्तुत हुआ है। मटियानीजी के 'बर्फ की चट्टाने' इस कहानी संग्रह में दलित चेतना का चित्रण हुआ है। 'सतजुगीया आदमी' इस कहानी में कुमाऊँ प्रदेश के डोम – चामार जाती का वर्णन हुआ है। हरराम और परराम पिता-पुत्र की कहानी है जो हरराम परंपराओ से जुडा है जो जाती की मर्यादा में रहता है। परराम आधुनिक विचार का है जो जाती के बाहर जाकर जिना पसंद करता है। वह पिता से कहता है "हम डोम लोगो की आत्मा और बुद्धी को एक जहर तो जन्म-जन्मांतरो से लगा हुआ है, उँची जात के लोग हमे कुत्तो से भी ज्यादा अछूत मानते आये।" २. परराम अपने पिता से कहता है की हम मरें जानवर का मांस नही खायेंगे। ऐसा कोई काम नही करेंगे जो लोग हमे नीच कहें। पंडित केशवानंद की भैस मर जानेपर हरराम को भैंस खिंचने बुलाया जाता है। हरराम इस काम को करना नही चाहता। लेकीन पंडित जंत्र-मंत्र करेंगे इस बात से डरता है। इस तरह जातिभेद को बढाने का काम पंडितो ने किया है। भगवान या जादू, मंत्र दिखाकर लोगोंपर वे अत्याचार करते रहें। समाज में फुट डालकर उनका शोषण ही किया फिर भी दलितों पर अन्याय जो था वह परराम जैसे युवकों ने उसपर आवाज उठाई है। कहानी में हरराम को ही सतजुगीय कहाँ है जो उंची जातीवालो में काम करता है। इस सतजुगीय पर होनेवाला शोषण और उसका निधन यह दो बाते मानवता को जागृत करनेवाली है।

मटियानीजी की 'धधुतियाँ त्योहार' कहानी कुमाऊँ प्रदेश की है। गुजरात में शिल्पकार लोग ठाकूर, ब्राम्हण के आश्रित हैं। वहाँ श्राद्ध पक्ष के त्योहार में कौआ को खीर दी जाती है। देवरा, जो है वह ठाकूर कल्याणसिंह के यहाँ काम करता है। जमीन के विवाद मामले को लेकर जब पंचायत होती है तब ठाकूर के घर में सभी देवराम को पुकारते हैं। तब धधुतियाँ त्योहार की तरह वातावरण था और इस समय कौआ देवराम था। देवराम पार चिल्लाते हुए ठाकूर कल्याणसिंह कहते हैं "कब से पुकारते –पुकारते परेशान हो गया यह नमक हराम अब इस समय अपनी सवारी लिए आ रहा। अरे ! आजकाल तो इन लोगों की नसें एकदम ऊपर चढी हुई। सुरज क्या आया , इन लोगों के बाप का ही राज आ गया।" ३. स्वाधीनता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी तथा बाबासाहेब आंबेडकर के कारण दलितो में जो चेतना आयी है उसकी झलक इस कहानी में मिलती है। देवराम को ठाकूर के पंचायत में पंच होकर जाना था जिसकारण वह धधुतियाँ लोहार का कौआं बना था। अछुतोद्धार आंदोलन के कारण सुवर्ण नेताओं ने हरीजनों को उंचा उठाने की बात छेडी थी। इस पहाडों पर सहनेवाले देवराम जैसे शिल्पकार लोग सुवर्णो में चाकर थे जो उन्हें अछूत माना जाता था। अब इस रूढी में परिवर्तन आना शुरू हुआ था। अब ये शिल्पकार भैस का गोश्त खाना बंद कर रहे थे और सुवर्णो को 'सेवा मानियों' के स्थानपर 'जै हिन्द' कह रहे थे। अब देवराम ठाकूर भी अनेक बातों को रोकने का प्रयास करता। लेखक इस देवराम के संदर्भ में लिखते है – "देवराम की आँखो में आजकाल एक और सपना तैरना लग गया था। अगर उसका बेटा चेतराम हायस्कूल भी पास कर ले और कभी पटवारी-पेशकर बनकर इसी पट्टी में आ जाए , तो उसका सर औरों से हाथ भर उँचा हो जायेगा। आज जो ठाकूर – ब्राम्हण उसे डुमडा - डुमडा कहते है। कल वहीं नमस्कार करने लग जाएंगे।" ४. प्रस्तुत कहानी का देवराम जागरूक और चेतना संपन्न दिखाई देता है। देवराम सिर्फ अपने पुत्र में यह परिवर्तन नही लाना चाहता बल्की अपनी जात- बिरादरी के साथ के लोगों में भी यह सुधार लाना चाहता है। देवराम के माता –पिता ठाकूर के यहाँ नौकर थे तब उन्हें गालीयाँ सुननी पडती लेकीन आज देवराम ऐसा नहीं है। इस बात से उसे नई चेतना और अपनी बदलती जीवन धारा से वह प्रसन्न दिखाई देता है।

मटीयानीजी कि 'नंगा' कहानी भी दलित जीवन कि त्रासदी को व्यक्त करती है। कहानी की नायिका रेवती शिल्पकारीन है। उसका पती हरिराम यह ठाकूर गुमान सिंह के यहाँ हलवाहा है। दोनों पती-पत्नी ठाकूर के यहाँ काम करते है। कुछ दिन बाद हरिराम का निधन होता है और रेवती विधवा बन जाती है। रेवती वापस अपने गाँव जाना चाहती है मगर ठाकूर जाने नहीं देता। ठाकूर अपनी खेती में झोपडी है वहाँ रहने के लिए उसे कहता है। ठाकूर अपनी बुरी नजर के साथ उससे संबंध रखता है। रेवती गर्भवती होनेपर ठाकूर का परिवार बच्चे को नदी में छोडने की बात करता है। तब रेवती कहती है। "गुंसाइनी तुम्हारे ठाकूर ने घर बहुत सोच समझकर लगवाया , मगर जिसे नौ महिने ढोया, उसे इतनी जल्दी नदी में बहा देने की ताकद मुझसे नही।" ५. माँ की ममता क्या होती है यह रेवती में दिखाई देती है। रेवती पंचायत में न्याय माँगती है। ठाकूर कुछ जमीन देने के लिए तयार होता है। लेकिन रेवती का स्वाभिमान जाग उठता है। वह जमीन का त्याग करती है। रेवती की चचीया ससुर सगतराम नदी में मछली पकडते समय ठाकूर को वह दिखाई देता है। ठाकूर को वह सगतराम नंगा लगता है। लेखक यहाँ कहना चाहता हो कि वह नंगा सगतराम नंगा ठाकूर , नंगी पंचायत को दर्शाता है। स्वाधीनता के समय ठाकूर जैसे लोग दलित नारी का शोषण करते रहे। लेकीन फिर भी रेवती जैसी नारियों ने संघर्ष किया।

लाख गरिबी और दरिद्रता होकर भी अपना मान –सन्मान के लिए जुझनेवाली नारियाँ यहाँ दृष्टिगत होती है। उँची और संपन्न जाती के खोखलापण इन कहानियों में स्पष्ट हुआ है। बीसवी सदी में समाज सुधारकों ने न्याय देणे का प्रयास किया है। आधुनिक युग के इस इक्कीसवी सदी में दलित समाज में काफी सुधार आया है। विश्व के हर क्षेत्र में उन्होने अनेक कठीनाईयों को पार करते उँचा स्थान प्राप्त किया है। हिंदी साहित्य के अनेक लेखकोंने भी दलित जीवन का साहित्य लिखकर उन्हे न्याय देने का प्रयास किया है। प्रेमचंद , नागार्जुन, रज्जन, त्रिवेदी , राजेंद्र यादव, शैलेश मटीयानी जैसे लेखकों का साहित्य यहाँ महत्वपूर्ण है।

आधुनिक युग के समाज में बदलती इस जीवनधारा में जातीभेद खत्म होता दिखाई देता है। लेकीन फिर भी किसी कोने में दलित अत्याचार की घटना होती है जो मानवी सभ्यता , मानव व्यवहार को फिर अज्ञान की तरफ ले जाती है।

संदर्भ :

1. प्रेमचंद –जागरण नवंबर १९३२ संपादकीय
2. सतजुगीया आदमी – शैलेश मटीयानी पृ-१३२
3. धधुतीया त्यौहार - शैलेश मटीयानी पृ-५५५
4. धधुतीया त्यौहार - शैलेश मटीयानी पृ-५५८
5. नंगा - शैलेश मटीयानी पृ-१६१